दुःखभोग

फ्रैंकलीन द्वारा तैयार नोट्स

क. परिचय

ख. पाप से दुःखभोग

1. मनुष्य अपने और दूसरों के लिए दुःख ले कर आता है।
2. पाप शैतान के राज्य की व्यवस्था और संस्कृति है।
3. जब विश्वासी पाप करता है, तब वह शैतान के राज्य में कदम रखता है।

ग. पापियों से दुःखभोग

1. जब हम सुसमाचार का प्रचार करते हैं।
2. हम युद्ध पर हैं।

घ. दुःखभोग जिसका प्रयोग हमारा परमेश्वर पिता करता है

1. हमारे विश्वास और निष्ठा को परखने के लिए
2. हमारे चरित्र को सिद्ध करने के लिए
3. परमेश्वर के नाम की महिमा लाने के लिए
4. कुछ बीमारियों का दुःख परमेश्वर की महिमा के लिए है
5. दूसरो की सेवा के लिए हमें तैयार करना
6. हमें सुरक्षित रखने के लिए तथा/या हमें अगुवाई देने के लिए
7. कुछ दुख परमेश्वर के अनुशासन के परिणाम होते है।

5. दुःखभोग

क. परिचय

यूहन्ना 16:33 ''संसार में तुम्हें क्लेश होता है।''

(कष्ट – परेशानी – दुःख – सताव – दबाव)

प्रेरितों के काम 14:22 ''चेलों के मनों को स्थिर करते और विश्वास में स्थिर बने रहने के लिए यह कह कर प्रोत्साहित करते रहे, '' हमें बड़े क्लेश उठा कर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना है।''

ख. पाप से दुःख भोग

1. मनुष्य अपने तथा दूसरों के लिए बड़ा दुःख लेकर लाता है।

मनुष्य का पापी स्वभाव ले कर आता है : भ्रष्टाचार – झूठ धोखा – चोरी – कत्ल – हिंसा – बन्दूकें – बम्ब – भूमिगत विस्फोटकों का जाल – यातना – बलात्कार – कौटुम्बिक व्यभिचार – द्वेष – और सूची इसी प्रकार चलती रहती है।

यिर्मयाह 17:9 '' मन तो सब वस्तुओं से अधिक धोखेबाज़ होता है, और असाध्य रोग से ग्रस्त है।''

इब्रानियों 3:7–19 '' कहीं ऐसा न हो कि तुम में से कोई व्यक्ति पाप के छल में पड़ कर कठोर हो जाए।''

आज के संसार में हर प्रकार के दुःखों की जड़ पाप है।

प्रत्येक मनुष्य की नसों में पाप का ज़हर है जो सर्वप्रथम उसके लिए दुख और मृत्यु लाती है और फिर दूसरों के लिए भी।

★ उदाहरण : मेरा मित्र जिसे ज़हरीले सांप ने डस लिया।

पाप इस कदर अधिक पापमय है कि मनुष्य सही और गलत में भेद नहीं कर पाता :
यशायाह 5:20 ''हाय उन पर जो बुरे को भला और भले को बुरा कहते हैं, जो अन्धकार को प्रकाश और प्रकाश को अन्धकार ठहराते हैं।

क्योंकि पापी मनुष्य भले और बुरे का भेद नहीं जानता वह निरन्तर ऐसे चुनाव करता है जो उसके लिए दुख और विपत्ति लाती है।

गलातियों 6:7–8 "क्योंकि जैसा बोओगे वैसा ही काटोगे, क्यों जो अपने शरीर के लिए बोता है वह शरीर के द्वारा विनाश की कटनी काटेगा।

मनुष्य को न केवल उद्धारकर्त्ता की ज़रुरत है, परन्तु धर्मी प्रभु की भी जो उनके निर्णयों और चुनावों में अगुवाई करे।

लूका 6:46–49 "जब तुम मेरा कहना नहीं मानते, तो क्यों मुझे हे प्रभु, हे प्रभु, कहते हो?
(47) जो कोई मेरे पास आता है, और मेरी बातें सुनकर उन्हें मानता है, मैं तुम्हें बताता हूं कि वह
किस के समान है (48) वह उस मनुष्य के समान है, जिस ने घर बनाते समय भूमि गहरी खोदकर चट्टान
की नेव डाली, और जब बाढ़ आई तो धारा उस घर पर लगी, परन्तु उसे हिला न सकी; क्योंकि वह
पक्का बना था।(49) परन्तु जो सुनकर नहीं मानता, वह उस मनुष्य के समान है, जिस ने मिट्टी पर
बिना नेव का घर बनाया। जब उस पर धारा लगी, तो वह तुरन्त गिर पड़ा, और वह गिरकर सत्यानाश
हो गया।।

इस से हम सब लगातार प्रार्थना करने की महत्वता से प्रभावित होते हैं जिससे कि हम देख और सुन सकें: "हर समय और हर प्रकार से आत्मा में प्रार्थना, और विनती करते रहो (इफिसियों 6:18)।

क्रूस हमारे पापों के विशाल आकार को दिखाता है। यीशु को सभी ने महान, ज्ञानी, अच्छा, शुद्ध, निर्दोष जन के रुप में पहचाना। वह वो मनुष्य था जो बन्धुओं को छुड़ाने, टूटे हुओं को जोड़ने, हमें सच्चाई सिखाने और मार्ग दिखाने आया। फिर भी मनुष्यों ने उसके जीवन को सबसे क्रूरतम् उपाय के साथ बुझा दिया (उन्होंने जो बुरे को भला और भले को बुरा कहते हैं। यशायाह 5:20) तथा बरअब्बा को आज़ाद कर दिया। (लूका 23:18–25)

2. पाप शैतान का राज्य है, जहां उसका शासन है।

यीशु के बिना मनुष्य "शैतान के फन्दे" में जकड़ा है, जिसने उन्हें अपनी इच्छा पूर्ण करने के लिए बन्दी बना रखा है। 2 तीमुथियुस 2:26

इफिसियों 2:1–10 " तुम तो उन अपराधों और पापों के कारण मरे हुए थे, जिनमें तुम पहिले इस संसार की रीति और आकाश में शासन करने वाले अधिकारी अर्थात उस आत्मा के अनुसार चलते थे जो अब भी आज्ञा न मानने वालों में क्रियाशील है। उन्हीं में हम सब भी पहिले अपने शरीर की लालसाओं में दिन बिताते थे, शारीरिक तथा मानसिक इच्छाओं को पूरा करते थे, और अन्य लोगों के समान स्वभाव ही से क्रोध की सन्तान थे।"

- ★ बाहर निकलने का रास्ता – यीशु ने कहा, "मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता।" यूहन्ना 14:6

प्रेरितों के काम 4:12 "और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं; क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिस के द्वारा हम उद्धार पा सकें।।

"हे सज्जनो, उद्धार पाने के लिए मैं क्या करुं?" प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर, तो तू और तेरा घराना उद्धार पाएगा।" प्रेरितों के काम 16:30–31

सच्चा **विश्वास** जिसका परिणाम यीशु मसीह के प्रति वचनबद्धता और **आज्ञाकारिता** है – और आज्ञाकारी बालकों की नाई अपनी अज्ञानता के समय की पुरानी अभिलाषाओं के सदृश न बनो। (15) पर जैसा तुम्हारा बुलानेवाला पवित्र है, वैसे ही तुम भी अपने सारे चाल चलन में पवित्र बनो। (1 पतरस 1:14–16)

3. विश्वासी होते हुए, जब मै पाप करता हूं, तब मै शैतान के राज्य में कदम रखता हूं, और शैतान के पास मुझ पर आक्रमण करने का वेध अधिकार है।

शैतान लगातार हमें पाप के द्वारा अपने राज्य में लाने के लिए लुभाता रहता है।

2 कुरिन्थियों 11:13–15 " ... ... क्योंकि शैतान भी ज्योतिर्मय स्वर्गदूत का रुप धारण करता है। इसलिए यदि उसके सेवक भी धार्मिकता के सेवक होने का रुप धारण करते हैं तो इसमें कोई आर्श्चय नहीं, और उनका अन्त उनके कार्यों के अनुसार होगा।"

यूहन्ना 8:44 " तुम अपने पिता से हो, और अपने पिता की लालसाओं को पूरा करना चाहते हो। वह तो आरम्भ ही से हत्यारा है ... सत्य उसमें है ही नहीं ... वह झूठा है और झूठ का पिता है।"

प्रकाशितवाक्य 12:9 " वह बड़ा अजगर ... पुराना सांप जो इबलीस और शैतान कहलाता है और जो सम्पूर्ण संसार को भरमाता है।"

1 यूहन्ना 5:19 " सारा संसार उस दुष्ट के वश में पड़ा है।"

इफिसियों 4:22–32 "और न शैतान को अवसर दो।"

2 तीमुथियुस 2:26 मनुष्य "शैतान के फन्दे" में जकड़ा है, जिसने उन्हें अपनी इच्छा पूर्ण करने के लिए बन्दी बना रखा है।

उदाहरण: चूहेदानी में चूहे को आकर्षित करने के लिए कुछ खाने की वस्तु रखी जाती है। उसकी खुशबू सूंघ कर चूहा रुके बिना नहीं रह सकता।

गलत निर्णय – पीछे पड़ जाना, ले लेना, लालच करना, जिसे हम जानते हैं कि यह गलत है और वे बाते भी जिन्हें हम नहीं जानते कि गलत है, शत्रु को आक्रमण करने का अवसर देता है।

गलातियों 6:7–8 " धोखा न खाओ : परमेश्वर ठट्ठों में नहीं उड़ाया जाता, क्योंकि मनुष्य जैसा बोएगा वैसा ही काटेगा। क्योंकि वह जो अपने शरीर के लिए बोता है, वह शरीर के द्वारा विनाश की कटनी काटेगा ; परन्तु वह जो पवित्र आत्मा के लिए बोता है, वह पवित्र आत्मा के द्वारा अनन्त जीवन की कटनी काटेगा।"

नीतिवचन 13:21 "विपत्ति पापियों का पीछा करती है, परन्तु धर्मियों को प्रतिफल में सुख – समृद्धि मिलती है।"

★ शैतान ने यीशु को लुभाने, फंसाने और धोखा देने की कोशिश की। लूका 4:1–13

यूहन्ना 14:30 "क्योंकि इस संसार का सरदार आता है, और मुझ में उसका कुछ नहीं।"
इसका अभिप्राय – ऐसा कुछ नहीं जो उसका हो और उसे वैधिक अधिकार दे।

★ शैतान ने पतरस को घमण्ड के द्वारा लुभाया और धोखा दिया। लूका 22:24

लूका 22:31 "शैतान ने तुम लोगों को मांग लिया है कि गेंहूं की नाई फटके।"

पतरस में कुछ चीज़ शैतान की थी। कुछ ऐसी चीज़ जो शैतान की थी जिसके कारण उसको वैधिक मिला ... घमण्ड।

★ अक्षमाशीलता शैतान को अवसर देता है

2 कुरिन्थियों 2:9–11 ... क्षमा किया है ... कि शैतान का हम पर दांव न चले, क्योंकि हम उसकी युक्तियों से अनजान नहीं।

मत्ती 18:21–35 "... उसे दण्ड देने वालों के हाथ में सौंप दिया ..."

★ बीमारियों के अनेक विभिन्न कारण हो सकते हैं परन्तु पाप उनमें से एक कारण है।

लूका 13:11, 16 "एक स्त्री थी, जिसे अठारह वर्ष से एक दुर्बल करनेवाली दुष्टात्मा लगी थी, ... जिसे शैतान ने अठारह वर्ष से बान्ध रखा था,"

यूहन्ना 5:5, 14 अड़तीस वर्ष से बीमारी ... फिर से पाप मत करना, ऐसा न हो कि इस से कोई भारी विपत्ति तुझ पर आ पड़े।

उदाहरण : मेरे पिता ने दूसरी औरत के लिए मेरी माता को तलाक दे दिया। उसका पाप बड़ा था। मेरी मां बहुत क्रोधित हुई और कड़वाहट से यहां तक भर गई कि कहने लगी कि यदि मेरे पास बन्दूक होती तो मैं उन दोनो को मार देती। इसके बाद बहुत ही जल्द उन्हें कैंसर हो गया। उन्होंने अपने आप को प्रभु के लिए पूर्ण सर्मपण किया और मेरे पिता और उस औरत को क्षमा कर दिया। इसके बाद जल्द ही मेरी मां को कैंसर से चंगाई मिल गई।

नीतिवचन 3:11–12 हे मेरे पुत्र, यहोवा की शिक्षा से मुंह न मोड़ना, और जब वह तुझे डांटे, तो बुरा न मानना, क्योंकि यहोवा जिस से प्रेम रखता है उसको डांटता है, जैसे कि बाप उस बेटे को जिसे वह अधिक चहता है।

पाप शैतान को वैधिक आधिकार देता है, जिसकी अनुमति परमेश्वर देता है तथा इस प्रकार परमेश्वर का अनुशासन पूरा हो जाता है।

नीतिवचन 15:5 मूढ़ अपने पिता की शिक्षा का तिरस्कार करता है, परन्तु जो डांट को मानता, वह चतुर हो जाता है।

शैतान के फन्दे से बाहर निकलने का रास्ता, या किस प्रकार उसके जाल से बचें :

याकूब 4:7–8 "इसलिए परमेश्वर के अधीन हो जाओ। शैतान का सामना करो तो वह तुम्हारे पास से भाग जाएगा। परमेश्वर के निकट आओ तो वह भी तुम्हारे निकट आएगा। हे पापियों, अपने हाथ शुद्ध करो। और हे दुचित्तों, अपने हृदयों को पवित्र करो।"

यीशु प्रयत्न करते हैं कि उनके सुनने वाले पाप और पाप की गंभीरता को समझें। जब तक तू अपने मुद्दई के साथ मार्ग में हैं, उस से झटपट मेल मिलाप कर ले कहीं ऐसा न हो कि मुद्दई तुझे हाकिम को सौंपे, और हाकिम तुझे सिपाही को सौंप दे और तू बन्दीगृह में डाल दिया जाए। (26) मैं तुम से सच कहता हूं कि जब तक तू कौड़ी कौड़ी भर न दे तब तक वहां से छूटने न पाएगा।।(27) तुम सुन चुके हो कि कहा गया था, कि व्यभिचार न करना। (28) परन्तु मैं तुम से यह कहता हूं, कि जो कोई किसी स्त्री पर कुदृष्टि डाले वह अपने मन में उस से व्यभिचार कर चुका। (29) यदि तेरी दहिनी आंख तुझे ठोकर खिलाए, तो उसे निकालकर अपने पास से फेंक दे; क्योंकि तेरे लिये यही भला है कि तेरे अंगों में से एक नाश हो जाए और तेरा सारा शरीर नरक में न डाला जाए।(30) और यदि तेरा दहिना हाथ तुझे ठोकर खिलाए, तो उस को काटकर अपने पास से फेंक दे, क्योंकि तेरे लिये यही भला है, कि तेरे अंगों में से एक नाश हो जाए और तेरा सारा शरीर नरक में न डाला जाए।। मत्ती 5:25–30

- ✎ युनानी भाषा में "नरक" का अनुवाद "गीन्नन" हुआ, जो यरुशलेम के दक्षिण और पश्चिम में घाटी है जहां शहर का कचरा और गन्दा पानी छोड़ा जाता था। बाद में यहुदी इस नाम का प्रयोग दण्ड के स्थान की तरह करने लगे।

- ✎ सन्देश यह है – किसी भी हालत में पाप से बचें, क्योंकि यह आपके लिए इस संसार की गन्दगी का नाला और कचरा लेकर आएगा।

मत्ती 26:41 " जागते रहो और प्रार्थना करते रहो कि तुम परिक्षा में न पड़ो। आत्मा तो तैयार है, परन्तु देह दुर्बल है।"

लूका 11:21–22 " जब एक बलवन्त मनुष्य पूर्णतः हथियार बांधे अपने घर की रखवाली करता है तो उसकी सम्पत्ति सुरक्षित रहती है। पर जब उससे भी बलवन्त कोई व्यक्ति उस पर आक्रमण करके उसे पराजित करता है तो वह उसके समस्त हथियारों को जिन पर उसे भरोसा था छीनता और सम्पत्ति को लूट कर बांट देता है।"

धोखा दे कर / परीक्षा कर / कामुकता में बहकाने के द्वारा : शैतान आक्रमण करता है।

इब्रानियों 12:15 "ध्यान रखो कि कोई परमेश्वर के अनुग्रह से वंचित न रह जाए, या कोई कड़वी जड़ फूटकर कष्ट का कारण न बनें, जिससे कि बहुत से लोग अशुद्ध हो जाएं।"

मरकुस 11:25 "और जब कभी तुम खड़े हो कर प्रार्थना करो तो यदि तुम्हारे मन में किसी के प्रति कुछ विरोध है तो क्षमा करो।"

यहोशु 24:15 "आज ही चुन लो कि तुम किसकी सेवा करोगे : उन देवताओं की जिनकी सेवा तुम्हारे पूर्वज फरात नदी के उस पार करते थे, या एमोरियों के देवताओं की जिनके देश में तुम रहते हो। परन्तु मैं तो अपने घराने समेत यहोवा ही की सेवा करुंगा।"

ग. पापियों से दुःखभोग – धार्मिकता के जीवन का परिणाम

1. जब मै अपने जीवन और शब्दों के द्वारा क्रूस का प्रचार करता हूं।

मत्ती 5:10–12 "धन्य है वे जो धार्मिकता के कारण सताए जाते हैं ...।"

लूका 21:16–19 और तुम्हारे माता पिता और भाई और कुटुम्ब, और मित्र भी तुम्हें पकड़वाएंगे; यहां तक कि तुम में से कितनों को मरवा डालेंगे। (17) और मेरे नाम के कारण सब लोग तुम से बैर करेंगे। (18) परन्तु तुम्हारे सिर का एक बाल भी बांका न होगा। (19) अपने धीरज से तुम अपने प्राणों को बचाए रखोगे।।

यूहन्ना 15:20 " यदि उन्हों ने मुझे सताया, तो तुम्हें भी सताएंगे"

2 तीमुथियुस 3:12 "वे सब, जो भक्तिपूर्ण जीवन व्यतीत करना चाहते हैं, सताए जाएंगे।"

इब्रानियों 11:25 " उसने पाप के क्षणिक सुख की अपेक्षा परमेश्वर की प्रजा के साथ दुख भोगना ही अच्छा समझा। उसने मसीह के कारण निन्दित को मिस्र के धन के भण्डारों की उपेक्षा बढ़कर समझा।"

इब्रानियों 12:1–3 इस कारण जब कि गवाहों का ऐसा बड़ा बादल हम को घेरे हुए है, तो आओ, हर एक रोकनेवाली वस्तु, और उलझानेवाले पाप को दूर करके, वह दौड़ जिस में हमें दौड.ना है, धीरज से दौड़ें। (2) और विश्वास के कर्ता और सिद्ध करनेवाले यीशु की ओर से ताकते रहें; जिस ने उस आनन्द के लिये जो उसके आगे धरा था, लज्जा की कुछ चिन्ता न करके, क्रूस का दुख सहा; और सिंहासन पर परमेश्वर के दहिने जा बैठा। (3) इसलिये उस पर ध्यान करो, जिस ने अपने विरोध में पापियों का इतना वाद-विवाद सह लिया कि तुम निराश होकर हियाव न छोड़ दो।

फिलिप्पियों 1:29 "क्योंकि मसीह के कारण तुम पर यह अनुग्रह हुआ कि तुम उस पर केवल विश्वास ही न करो वरन् उसके लिए कष्ट भी सहो।"

प्रेरितों के काम 8:1–4 "कलीसिया पर घोर अत्याचार आरम्भ हुआ।" क्योंकि उन्होंने यीशु का प्रचार किया।

- प्रेरितों के काम 5:41 उसके नाम के कारण दुख उठाने पर आनन्दित हुए।
- प्रेरितों के काम 7:58 स्तिफनुस पर पथराव किया गया

  प्रेरितों के काम 9:16 "मैं उसे बताऊंगा, कि मेरे नाम के लिये उसे कैसा कैसा दुख उठाना पड़ेगा।"

- 2 कुरिन्थियों 11:23–33 पौलुस का दुख उठाना
- इब्रानियों 11:33–39 संसार उनके योग्य नहीं था।

1 पतरस 2:20–24 " तुम इसी अभिप्राय से बुलाए गए हो, क्योंकि मसीह ने भी तुम्हारे लिए दुख सहा और तुम्हारे लिए एक आदर्श रखा कि तुम भी उसके पद चिन्हों पर चलो। उसने न तो कोई पाप किया और न उसके मुंह से छल की कोई बात निकली। उसने गाली सुनते हुए गाली नहीं दी, दुख सहते हुए धमकियां नहीं दी, पर अपने आप को उसके हाथ सौंप दिया जो धार्मिकता से न्याय करता है।"

1 पतरस 3:10–17 " ... यदि धार्मिकता के लिए कष्ट सहो तो तुम धन्य हो ... क्योंकि यदि परमेश्वर की इच्छा यही हो तो उत्तम यह है कि तुम उचित काम करने के लिए दुख उठाओ, न कि अनुचित काम के लिए।"

1 पतरस 4:13, 16–19 "परन्तु जैसे जैसे तुम मसीह के दुखों में सहभागी होते रहते हो, आनन्दित रहो ... यदि कोई मसीही होने के कारण दुख उठाता है, तो वह लज्जित न हो, वरन् अपने इस नाम के लिए परमेश्वर की महिमा करें ... इसलिए वे भी जो परमेश्वर के इच्छानुसार दुख उठाते हैं , उचित कार्य करते हुए अपने अपने प्राण को विश्वासयोग्य सृष्टिकर्ता के हाथों में सौंप दें।"

2. हम युद्ध पर हैं। युद्ध का परिणाम दुख उठाना है।

- ★ इफिसियों 6:10–18
- ★ मत्ती 11:12 " स्वर्ग के राज्य ने हिंसा सहा है"
- ★ प्रेरितों के काम 14:22 "हमें बड़े क्लेश उठा कर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना है।"

घ. दुःखभोग जिसका प्रयोग हमारा परमेश्वर करता है

जिन समस्याओं का आप सामना करते हैं वे या तो आप को पराजित कर देगी या विकसित कर देगी, यह इस पर निर्भर करता है कि आप इनका कैसे प्रतिउत्तर देंगे। दुर्भाग्य से अधिकत्तर लोग यह देखने में असफल रहते हैं कि परमेश्वर कैसे इन समस्याओं को उनके जीवन के भले के लिए इस्तेमाल करता है। उनकी प्रतिक्रिया मूर्खतापूर्ण होती है और वे अपनी समस्याओं पर कुढ़ते हैं , बजाय इसके कि रुक कर विचार करें कि इससे उन्हें क्या लाभ हो सकता है।

> नीतिवचन 6:23 "क्योंकि आज्ञा तो दीपक, और शिक्षा ज्योति है , और शिक्षा के लिए ताड़ना जीवन का मार्ग है।

परमेश्वर अकसर इन समस्याओं का इस्तेमाल आपके जीवन में करता है:

1. हमारे विश्वास और निष्ठा को परखने के लिए

परमेश्वर समस्याओं का प्रयोग आपको जांचने के लिए करता है। लोग टी बैग (चाय की थैली) के समान हैं ... यदि आप जानना चाहते हैं कि उसके अन्दर क्या है, बस उसे गरम पानी में डाल दें। क्या कभी परमेश्वर ने समस्या के साथ आपके विश्वास की परख की है? समस्याऐं आपके बारे में क्या प्रकट करती है?

> याकूब 1:2–3 " जब तुम विभिन्न परीक्षाओं का सामना करते हो तो इसे बड़े आनन्द की बात समझो, यह जानते हुए कि तुम्हारे विश्वास के परखे जाने से धीरज उत्पन्न होता है।
>
> याकूब 1:12–15 "धन्य है वह मनुष्य जो परीक्षा में स्थिर रहता है, क्योंकि खरा निकल कर वह जीवन का मुकुट को प्राप्त करेगा।"
>
> 1 पतरस 1:6–7 "इस से तुम अति आनन्दित होते हो, भले ही तुम्हे अभी कुछ समय के लिए विभिन्न परीक्षाओं के द्वारा दुख उठाना पड़ा हो कि तुम्हारा विश्वास – जो आग में ताए हुए नश्वर सोने से भी अधिक बहुमूल्य है – परखा जा कर यीशु मसीह के प्रकट होने पर प्रशंसा, महिमा, और आदर का कारण ठहरे।

प्रकाशितवाक्य 2:10 '' जो क्लेश तू सहने पर है उनसे न डर। देखो, शैतान तुम में से कितनों को बन्दिगृह में डालने पर है कि तुम परखे जाओ, और तुम्हे दस दिन तक क्लेश उठाना पड़ेगा। प्राण देने तक विश्वासी रह – तब मैं तुझे जीवन का मुकुट प्रदान करुंगा।''

जंगल में ले जाने का उद्देश्य व्यवस्थाविवरण 8:2–5

स्मरण रख कि तेरा परमेश्वर यहोवा उन चालीस वर्षों में तुझे सारे जंगल के मार्ग में से इसलिये ले आया है, कि वह तुझे नम्र बनाए, और तेरी परीक्षा करके यह जान ले कि तेरे मन में क्या क्या है, और कि तू उसकी आज्ञाओं का पालन करेगा वा नहीं। (3) उस ने तुझ को नम्र बनाया, और भूखा भी होने दिया, फिर वह मन्ना, जिसे न तू और न तेरे पुरखा ही जानते थे, वही तुझ को खिलाया; इसलिये कि वह तुझ को सिखाए कि मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं जीवित रहता, परन्तु जो जो वचन यहोवा के मुंह से निकलते हैं उन ही से वह जीवित रहता है। (4) इन चालीस वर्षों में तेरे वस्त्र पुराने न हुए, और तेरे तन से भी नहीं गिरे, और न तेरे पांव फूले। (5) फिर अपने मन में यह तो विचार कर, कि जैसा कोई अपने बेटे को ताड़ना देता है वैसे ही तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ को ताड़ना देता है।

2. हमारे चरित्र को सिद्ध करने के लिए

1 पतरस 19–20 क्योंकि यदि कोई परमेश्वर का विचार करके अन्याय से दुख उठाता हुआ क्लेश सहता है, तो यह सुहावना है। (20) क्योंकि यदि तुम ने अपराध करके घूसे खाए और धीरज धरा, तो उस में क्या बड़ाई की बात है? पर यदि भला काम करके दुख उठाते हो और धीरज धरते हो, तो यह परमेश्वर को भाता है।

परमेश्वर समस्याओं का इस्तेमाल हमें सिद्ध करने के लिए करता है। जब हम समस्याओं को सही ढंग से लेते हैं तो यह हमारे चरित्र का निर्माण करती है। परमेश्वर को आपके आराम से अधिक आप के चरित्र में रुची है।

रोमियों 5:3–4 ''हम अपने क्लेशों में भी आनन्दित होते हैं ... यह हमें धैर्य रखना सीखाते हैं। तथा धैर्य से खरा चरित्र बनता है जिससे हर बार परमेश्वर पर और अधिक भरोसा रखने में हमें सहायता मिलती है, और खरे चरित्र से आशा उत्पन्न होती है।''

इब्रानियों 2:10 ''क्योंकि जिसके लिए और जिसके द्वारा सब कुछ है, उसके लिए यह उचित था कि बहुत से पुत्रों को महिमा में लाने के लिए उनके उद्धार के कर्त्ता को दुख उठाने के द्वारा सिद्ध करे।''

इब्रानियों 5:8 ''पुत्र होने पर भी उसने दुख सह सह कर आज्ञा का पालन करना सीखा।''

यीशु ने अपना सिंहासन / प्रतिष्ठा / स्वर्ग छोड़ दिया ताकि वह हम में से एक हो जाए। ताकि वह हमारे साथ रहे, हमें सिखाए और हमारे लिए बलिदान हो जाए।

फिलिप्पियों 2:4–8 जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो। (6) जिस ने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा। (7) वरन अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरुप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया। (8) और मनुष्य के रूप में प्रगट होकर अपने आप को दीन किया, और यहां तक आज्ञाकारी रहा, कि मृत्यु, हां, क्रूस की मृत्यु भी सह ली।

उसने मनुष्यों के द्वेष, शंका और नासमझी को सहा। उसने हमारे दुखों में प्रवेश किया। हमारे दुखों को बांटा। (यशायाह 53)

1 पतरस 4:1–2 '' इसलिए, जबकि मसीह ने शरीर में दुख उठाया तो तुम भी इसी अभिप्राय से हथियार धारण करो, क्योंकि जिसने शरीर में दुख उठाया है, वह पाप से छूट गया है। इसलिए शरीर में अपना शेष जीवन मनुष्यों की अभिलाषाओं में नहीं, वरन् परमेश्वर की इच्छानुसार व्यतीत करो।''

इसी तरह – कठिनाईयों, समस्याओं, दुखों के द्वारा – हम दूसरों की सेवा और सेविकाई के अपने कार्य के लिए सिद्ध किए जाते हैं।

यह हमारे भीतर नैतिक और आत्मिक विजय को उत्पन्न करता है जहां हम अपनी देह पर निर्भर न रहते हुए उसकी (परमेश्वर) सामर्थ में स्थिर रहते हैं। अनुभव सबसे उत्तम शिक्षक है, परन्तु शिक्षा के लिए इसकी फीस सबसे अधिक है।

- ★ यूसुफ एक अच्छा उदाहरण है : अपने भाईयों के द्वारा घृणा पाई(उत्पत्ति 37:4), दासत्व में बेच दिया गया (37:27), स्त्री के द्वारा लुभाया गया (39:12) , बन्दीगृह में दो वर्ष के लिए रहा (39:20; 40:1)।

1 पतरस 5:8–10 '' ... तुम्हारे थोड़ी देर यातना सहने के पश्चात सारे अनुग्रह का परमेश्वर जिसने तुम्हे मसीह में अपनी अनन्त महिमा के लिए बुलाया – वह स्वयं ही तुम्हे सिद्ध, दृढ़, बलवन्त और स्थिर करेगा।''

याकूब 1:2–4 '' जब तुम विभिन्न परीक्षाओं का सामना करते हो तो इसे बड़े आनन्द की बात समझो, यह जानते हुए कि तुम्हारे विश्वास के परखे जाने से धीरज उत्पन्न होता है। पर धीरज को अपना पूरा कार्य करने दो कि तुम पूर्ण तथा सिद्ध हो जाओ, जिससे कि तुम में किसी बात की कमी न रहे।''(5:10–11) ''भाइयों, यातना और धैर्य के लिए भविष्यद्वक्ताओं को आदर्श समझो, जिन्होंने प्रभु के नाम से बातें की थीं। देखो, धैर्य रखने वालों को हम धन्य समझते हैं। तुमने अय्यूब के धैर्य के विषय में तो सुना ही है, और प्रभु के व्यवहार के परिणाम को देखा है कि प्रभु अत्यन्त करुणामय और दयालु है।''

★ जंगल में इस्राएली लोग लगातार शिकायत कर रहे थे, कुड़-कुड़ा रहे थे और बड़-बड़ा रहे थे (1 कुरिन्थियों 10:10 ; गिनती 11:1) । अपने चरित्र को सिद्ध नहीं होने दिया ।

रोमियों 5:3-4 " इतना ही नहीं, परन्तु हम अपने क्लेशों में भी आनन्दित होते हैं, क्योंकि यह जानते हैं कि क्लेश से धैर्य उत्पन्न होता है, तथा धैर्य से खरा चरित्र, और खरे चरित्र से आशा उत्पन्न होती है ।

3. परमेश्वर के नाम की महिमा लाने के लिए

यूहन्ना 12:27-28 जब मेरा जी व्याकुल हो रहा है। इसलिये अब मैं क्या कहूं? हे पिता, मुझे इस घड़ी से बचा? परन्तु मैं इसी कारण इस घड़ी को पहुंचा हूं। हे पिता अपने नाम की महिमा कर : तब यह आकाशवाणी हुई, कि "मैं ने उस की महिमा की है, और फिर भी करूंगा।"

★ यीशु उस घड़ी पर आ पहुंचे कि अपने मिशन को पूरा कर सकें, इसके लिए उन्हें बहुत कष्टों का सामना करना है । यह हमारे मिशन के लिए भी आवश्यक है ।

इब्रानियों 2:9-10 पर हम को यीशु जो स्वर्गदूतों से कुछ ही कम किया गया था, मृत्यु का दुख उठाने के कारण महिमा और आदर का मुकुट पहिने हुए देखते हैं; ताकि परमेश्वर के अनुग्रह से हर एक मनुष्य के लिये मृत्यु का स्वाद चखे। (10) क्योंकि जिस के लिये सब कुछ है, और जिस के द्वारा सब कुछ है, उसे यही अच्छा लगा कि जब वह बहुत से पुत्रों को महिमा में पहुंचाए, तो उन के उद्धार के कर्ता को दुख उठाने के द्वारा सिद्ध करे।

★ उसने दुखों से छुटकारे को नहीं मांगा। वह जानता था कि यह आवश्यक है, और एक उद्देश्य के लिए है ।

★ पिता की महिमा के लिए उसने सुख को छोड़ दिया । जिस प्रकार अनेक मिश्नरी करते हैं ।

अमेरिका के अधिकतर कलीसियाओं के लोगों का मानना है कि क्रूस का पुनरुत्थान वाला भाग - सुख का भाग - उसी को हमें देखना चाहिए । यह गलत धर्मविज्ञान है ।

नहीं ! क्रूस की "मृत्यु का भाग" पिता के लिए महिमा लाता है! उसके बाद पुनरुत्थान का भाग है ।

यूहन्ना 12:24 "मैं तुम से सच सच कहता हूं, कि जब तक गेहूं का दाना भूमि में पड़कर मर नहीं जाता, वह अकेला रहता है परन्तु जब मर जाता है, तो बहुत फल लाता है।"

लूका 9:22 मनुष्य के पुत्र के लिये अवश्य है, कि वह बहुत दुख उठाए,(सबसे पहिले) और पुरनिए और महायाजक और शास्त्री उसे तुच्छ समझकर मार डालें, और वह तीसरे दिन जी उठे (दूसरी)।

मृत्यु , दुख उठाने, वेदना और कष्ट के द्वारा :

- ❖ पाप पराजित हुआ। मृत्यु पराजित हुई। शैतान पराजित हुआ।
- ❖ परमेश्वर के लोग छुड़ाए गए तथा घर्मी ठहराए गए।

यीशु हमारा उदाहरण है : हर कीमत पर अपने स्वर्गीय पिता को महिमा देना हमारे जीवन का सर्वप्रथम और सबसे महत्वपूर्ण कार्य होना चाहिए।

जिस प्रकार शैतान ने यीशु को परखा, उसी प्रकार वह हमें परखेगा ताकि हम उसकी महिमा करें न कि अपने पिता की महिमा : और शैतान ने उस से कहा; मैं यह सब अधिकार, और इन का वैभव तुझे दूंगा। लूका 4:6

- ★ यीशु परमेश्वर की सन्तानों को छुड़ाने के लिए कहां तक जा सकते हैं यह दिखाने के द्वारा उन्होंने परमेश्वर को महिमा दी।

लूका 24:26 क्या अवश्य न था, कि मसीह ये दुख उठाकर अपनी महिमा में प्रवेश करे?

- ★ यीशु ने छुटकारे का दाम दिया – स्वर्ग के द्वारों को खोल दिया – फिर क्रूस पर कहा : ''पूरा हुआ ! (यूहन्ना 19:30)। उसने छुटकारे के कार्य को पूरा किया।
- ★ फिर यीशु ने हमें सब लोगों में सुसमाचार ले जाने का कार्य (मिशन) दिया। (महान आज्ञा ; मत्ती 28:19)

जिस प्रकार उसके मिशन में दुख उठाने और बलिदान की आवश्यकता थी, उसी प्रकार हमारें मिशन भी दुख– भोग और बलिदान मांगता है।

यही पौलुस का कुलुस्सियों 1:24 में कहने का अभिप्राय है :
अब मैं उन दुखों के कारण आनन्द करता हूं, जो तुम्हारे लिये उठाता हूं, और मसीह के क्लेशों की घटी उस की देह के लिये, अर्थात् कलीसिया के लिये, अपने शरीर में पूरी किए देता हूं।

''घटी'' दुख उठाना है, जो हर एक उन जाति, कुल, और ज़बान बोलने वालों के लिए आवश्यक है कि वह जाने कि यीशु कौन है और उसने उनके लिए क्या किया है।

1 पतरस 2:21 –23 और तुम इसी के लिये बुलाए भी गए हो क्योंकि मसीह भी तुम्हारे लिये दुख उठाकर, तुम्हें एक आदर्श दे गया है, कि तुम भी उसके चिन्ह पर चलो। (22)न तो उस ने पाप किया, और न उसके मुंह से छल की कोई बात निकली।(23) वह गाली सुनकर गाली नहीं देता था, और दुख उठाकर किसी को भी धमकी नहीं देता था, पर अपने आप को सच्चे न्यायी के हाथ में सौपता था।

प्रकाशितवाक्य 5:12 वध किया हुआ मेम्ना ही सामर्थ, और धन, और ज्ञान, और शक्ति, और आदर, और महिमा, और धन्यवाद के योग्य है।

प्रकाशितवाक्य 5:13 जो सिंहासन पर बैठा है, उसका, और मेम्ने का धन्यवाद, और आदर, और महिमा, और राज्य, युगानुयग रहे।

4. कुछ बिमारियों का दुःख परमेश्वर की महिमा के लिए है

यूहन्ना 11:4 " यह बीमारी मृत्यु की नहीं, परन्तु परमेश्वर की महिमा के लिये है, कि उसके द्वारा परमेश्वर के पुत्र की महिमा हो। "

यूहन्ना 9:2-3 "हे रब्बी, किस ने पाप किया था कि यह अन्धा जन्मा, इस मनुष्य ने, या उसके माता पिता ने? यीशु ने उत्तर दिया, कि न तो इस ने पाप किया था, न इस के माता पिता नेः परन्तु यह इसलिये हुआ, कि परमेश्वर के काम उस में प्रगट हों। "

2 कुरिन्थियों 12:7-10 और इसलिये कि मैं प्रकाशनों की बहुतायत से फूल न जाऊं, मेरे शरीर में एक कांटा चुभाया गया अर्थात् शैतान का एक दूत कि मुझे घूसे मारे ताकि मैं फूल न जाऊं। (8) इस के विषय में मैं ने प्रभु से तीन बार बिनती की, कि मुझ से यह दूर हो जाए। (9) और उस ने मुझ से कहा, मेरा अनुग्रह तेरे लिये बहुत है; क्योंकि मेरी सामर्थ निर्बलता में सिद्ध होती है; इसलिये मैं बड़े आनन्द से अपनी निर्बलताओं पर घमण्ड करूंगा, कि मसीह की सामर्थ मुझ पर छाया करती रहे। (10) इस कारण मैं मसीह के लिये निर्बलताओं, और निन्दाओं में, और दरिद्रता में, और उपद्रवों में, और संकटों में, प्रसन्न हूं; क्योंकि जब मैं निर्बल होता हूं, तभी बलवन्त होता हूं।।

5. दूसरो की सेवा के लिए हमें तैयार करना

यूहन्ना 12:24-26 मैं तुम से सच सच कहता हूं, कि जब तक गेहूं का दाना भूमि में पड़कर मर नहीं जाता, वह अकेला रहता है परन्तु जब मर जाता है, तो बहुत फल लाता है। जो अपने प्राण को प्रिय जानता है, वह उसे खो देता है; और जो इस जगत में अपने प्राण को अप्रिय जानता है; वह अनन्त जीवन के लिये उस की रक्षा करता करेगा।

यह पद स्पष्ट रीति से हमें बताता है :

- फल से पहिले मृत्यु है और मृत्यु से पहिले नया जीवन है।
- जब तक कि पहली मृत्यु नहीं, कोई पुनरुत्थान नहीं।

यह इस सच्चाई को ले कर आता है कि क्रूस के दो पहलू हैं

- ❖ पहला **दुख उठाने** का पहलू और फिर **जीवन** का पहलू।
- ❖ फलदायी जीवन और सेविकाई के लिए – क्रूस के दोनो पहलू का सामना और अनुभव करना आवश्यक है।

मत्ती 10:38–39 और जो अपना क्रूस लेकर मेरे पीछे न चले वह मेरे योग्य नहीं। जो अपने प्राण बचाता है, वह उसे खोएगा; और जो मेरे कारण अपना प्राण खोता है, वह उसे पाएगा।

रोमियो 8:35–37 कौन हम को मसीह के प्रेम से अलग करेगा? क्या क्लेश, या संकट, या उपद्रव, या अकाल, या नंगाई, या जोखिम, या तलवार? (36) जैसा लिखा है, कि तेरे लिये हम दिन भर घात किए जाते हैं; हम वध होनेवाली भेंड की नाई गिने गए हैं। (37) परन्तु इन सब बातों में हम उसके द्वारा जिस ने हम से प्रेम किया है, जयवन्त से भी बढ़कर हैं।

2 कुरिन्थियों 4:7–12 ... हम चारों ओर से क्लेश तो भोगते हैं, पर संकट में नहीं पड़ते; निरुपाय तो हैं, पर निराश नहीं होते। सताए तो जाते हैं; पर त्यागे नहीं जाते; गिराए तो जाते हैं, पर नाश नहीं होते। हम यीशु की मृत्यु को अपनी देह में हर समय लिये फिरते हैं; कि यीशु का जीवन भी हमारी देह में प्रगट हो। क्योंकि हम जीते जी सर्वदा यीशु के कारण मृत्यु के हाथ में सौंपे जाते हैं कि यीशु का जीवन भी हमारे मरनहार शरीर में प्रगट हो। सो मृत्यु तो हम पर प्रभाव डालती है और जीवन तुम पर।

ऊपर दिए गए पद दूसरों की सेविकाई के लिए क्रूस के दोनो पहलूओं की ज़रुरत पर ज़ोर डालता है।

इससे पहले कि हम पुनरुत्थान के पहलू का पूरी रीति से अनुभव करें, हमें मृत्यु के पहलू का अनुभव करना आवश्यक है।

फिलिप्पियों 3:10–11 और मैं उसको और उसके मृत्युंजय की सामर्थ को, और उसके साथ दुखों में सहभागी हाने के मर्म को जानूं, और उस की मृत्यु की समानता को प्राप्त करुं। (11) ताकि मैं किसी भी रीति से मरे हुओं में से जी उठने के पद तक पहुंचूं।

- यह पद स्पष्ट रीति से क्रूस के दोनो पहलूओं को सामने लाता है, और साथ ही वह एकमात्र क्रम जिसमें इनका अनुभव किया जाना है।

हम दूसरों के लिए यीशु के प्रेम और दुख उठाने का जीवित उदाहरण बन जाते हैं कि वे देखें और उससे सीखें।

- 1 कुरिन्थियों 13:1–8 "प्रेम धैर्यवान है ... सब बातें सहता है ... सब बातों में धैर्य रखता है ... प्रेम कभी मिटता नहीं।"

यूहन्ना 15:2 जो डाली मुझ में है, और नहीं फलती, उसे वह काट डालता है, और जो फलती है, उसे वह छांटता है ताकि और फले।(8) मेरे पिता की महिमा इसी से होती है, कि तुम बहुत सा फल लाओ, तब ही तुम मेरे चेले ठहरोगे।

मत्ती 10:16–25 देखो, मैं तुम्हें भेड़ों की नाई भेड़ियों के बीच में भेजता हूं ... अपनी पंचायत में तुम्हें कोड़े मारेंगे। (18) तुम मेरे लिये हाकिमों ओर राजाओं के सामने ...(21) भाई, भाई को और पिता पुत्र को, घात के लिये सौंपेंगे ... (22) मेरे नाम के कारण सब लोग तुम से बैर करेंगे (23) जब वे तुम्हें एक नगर में सताएं ... (24) चेला अपने गुरू से बड़ा नहीं ... (25) चेले का गुरू के बाराबर होना ही बहुत है।

- स्वयं के लिए और इस संसार के सुखों के लिए मरना लोगों के लिए कठिन है।
- उपभोक्ता ग्रस्त संस्कृति का परिणाम यह है कि हर एक की इच्छा की सन्तुष्टी हो और दुख उठाना न पड़े।
- इसने अब चंगाई, धन और समृद्धि के धर्म–विज्ञान को आगे बढ़ाया, बिना दुख उठाने के साथ।

फिलिप्पियों 1:29 क्योंकि मसीह के कारण तुम पर यह अनुग्रह हुआ कि न केवल उस पर विश्वास करो पर उसके लिये दुख भी उठाओ।

2 तीमुथियुस 1:8 इसलिये हमारे प्रभु की गवाही से, और मुझ से जो उसका कैदी हूं, लज्जित न हो, पर उस परमेश्वर की सामर्थ के अनुसार सुसमाचार के लिये मेरे साथ दुख उठा।

2 कुरिन्थियों 1:3–5 हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर, और पिता का धन्यवाद हो, जो दया का पिता, और सब प्रकार की शान्ति का परमेश्वर है। वह हमारे **सब क्लेशों में शान्ति देता है**; ताकि हम उस शान्ति के कारण जो परमेश्वर हमें देता है, उन्हें भी शान्ति दे सकें, जो किसी प्रकार के क्लेश में हों। क्योंकि जैसे मसीह के **दुख** हम को अधिक होते हैं, वैसे ही हमारी **शान्ति** भी मसीह के द्वारा अधिक हाती है।

- शान्तिदाता – पवित्र आत्मा – वह हर एक परिस्थिति में हमें शान्ति देने के लिए सदा हमारे साथ है। हालांकि, कभी–कभी उसके शब्दों, उसकी शान्ति को छोड़ देते हैं तथा केवल नकारात्मक पहलू चुनते हैं और अपने मन में कड़वाहट के ज़हर को आने देते हैं।

- हमें लोगों के साथ अपने व्यवाहर में चौकस रहना चाहिए। यदि हम उन्हें केवल अपने दिमाग से कुछ ज्ञान ही देते हैं और अपने अनुभव से परमेश्वर की शान्ति नहीं, तो यह उनके मन में कड़वाहट ला सकती है।

6. हमें सुरक्षित रखने के लिए तथा/या हमें अगुवाई देने के लिए

कभी – कभी परमेश्वर समस्याओं का इस्तेमाल हमें निर्देश देने के लिए या हमारी अगुवाई के लिए करता है।

कई बार परमेश्वर हमारे नीचे आग जला देता है ताकि हम चलते रहें, और फिर वह कुछ द्वार खोलता है और कुछ बन्द करता है।

- मूसा : सोचा कि वह अपने लोगों का अगुवा बनेगा। उसने अपने समय से और अपने तरीके से कमान सम्भाली और बन्द द्वार पाया (निर्गमन 2:14–15)। वह इसे पूरी तरह से छोड़ कर जंगलों की तरफ भागा। अपने जीवन और सेविकाई में परमेश्वर की योजना अनुसार चलने के लिए मूसा को "आग" और "जलती हुई झाड़ी" मिली।

समस्याएं अकसर हमें नई दिशा की ओर संकेत करती हैं और हमें बदलने के लिए प्रेरित करती हैं ।

हम में से हर एक के लिए परमेश्वर के पास उद्देश्य / योजना / सेविकाई है।

2 तीमुथियुस 1:9 जिस ने हमारा उद्धार किया, और पवित्र बुलाहट से बुलाया, और यह हमारे कामों के अनुसार नहीं; पर अपनी मनसा और उस अनुग्रह के अनुसार है जो मसीह यीशु में सनातन से हम पर हुआ है।

अपने जीवन के लिए उसके उद्देश्यों को खोजना / पाना / और उसमें चलने के लिए, यह आरम्भ होता है :

पहला : यह उसके वचन में प्रकट हुआ और विभिन्न तरीको से व्यक्त हुआ है :

> मीका 6:8 हे मनुष्य, उसने तुझे बता दिया है कि अच्छा क्या है। यहोवा तुझ से इसे छोड़ और क्या चाहता है कि तू न्याय से कार्य करे, कृपा से प्रेम रखे, और अपने परमेश्वर के साथ नम्रता से चले?

दूसरा : गहरी वचनबद्धता :

रोमियों 12:1 अतः हे भाइयों, मैं परमेश्वर की दया का स्मरण दिलाकर तुमसे आग्रह करता हूं कि तुम अपने शरीरों को जीवित, पवित्र और ग्रहणयोग्य बलिदान कर के परमेश्वर को समर्पित कर दो। यही तुम्हारी आत्मिक आराधना है।

''बलिदान'' शब्द का अभिप्राय आरामदायक, आसान जीवन से नहीं है। इसमें आवश्यकता है आपके जीवन, आपकी इच्छा त्यागने की। क्रूस को उठाना। उसकी आज्ञा मानना। अपने लिए नहीं ... दूसरों के लिए जीना।

उसके उद्देश्य को आपके जीवन में रोकना या उससे चूक जाना सम्भव है। विशेषकर अपनी इच्छा और आकांशा के लिए उसके वचन और उसकी इच्छा का अस्वीकार कर देने के द्वारा।

लूका 7:30 पर फरीसियों और व्यवस्थापकों ने यूहन्ना से बपतिस्मा न लेकर परमेश्वर की मनसा को अपने विषय में टाल दिया।

- योना ने परमेश्वर के वचन और इच्छा को अस्वीकार कर दिया था, और आप जानते हैं कि नतीजा क्या हुआ। उसके पास अपने तरीके हैं। उसकी इच्छा का विरोध, आपके जीवन में ''विशाल आकार'' की समस्याएं लेकर आती हैं।

रोमियों 9:19 '' ... कौन उसकी इच्छा का विरोध करता है?''

अन्य उदाहरण:

- पौलुस और सिलास बन्दिगृह में और जेलर का मन परिवर्त्तन। प्रेरितों के काम 16:22–34

जब हमें सताया जाता है तो केवल हम ही नहीं परन्तु यीशु भी दुख उठाते हैं।

- प्रेरितों के काम 9:5 '' उसने पूछा, ' प्रभु, तू कौन है?' तब उसने कहा, '' मैं यीशु हूं जिसे तू सताता है।''

परमेश्वर समस्याओं का इस्तेमाल आपकी रक्षा के लिए करता है। समस्याएं अप्रत्यक्ष कृपादान हो सकती है यदि वह आपको किसी और गम्भीर बात के नुकसान से बचाए।

- यूसुफ को अपने भाइयों के साथ कई समस्याएं थी। वे उसे मार देना चाहते थे, हालांकि परमेश्वर ने उसके बड़े भाई के मन में यह डाल कर कि उसे दासत्व में बेच दें, यूसुफ के प्राणों को बचाया। परमेश्वर ने उसकी रक्षा की।

- बाद में यूसुफ पर झूठा आरोप लगा कर उसे जेल में डाल दिया गया, सब इस उद्देश्य से कि सही जगह (मिस्र) और सही समय पर एक जाति को बचा सके (उत्पत्ति 37–48)। समस्याओं ने उसकी अगुवाई की।

7. कुछ दुख परमेश्वर के अनुशासन के परिणाम होते है।

परमेश्वर आपको सही करने के लिए समस्याओं का प्रयोग करता है। कुछ पाठ हम असफलताओं और पीड़ाओं के द्वारा सीखते है। हम अपने बच्चों को गरम तवा छूने से मना करते हैं। परन्तु अधिकतर बच्चे यह पाठ जलने के बाद ही सीखते हैं।

कई बार हमें किसी वस्तु का महत्व उसको खो देने के बाद पता चलता है, जैसे स्वास्थ्य, धन, सम्बन्ध आदि। दाऊद कहता है : " मुझ पर जो क्लेश आया वह मेरे लिए भला हुआ कि मैं तेरी विधियों को सीख सकूं।"(भजन संहिता 119:71–72) ।और दाऊद खराई की चाल चलने वाला मनुष्य था।

इब्रानियों 12:4–11 तुम ने पाप से लड़ते हुए उस से ऐसी मुठभेड़ नहीं की, कि तुम्हारा लहू बहा
हो। (5) और तुम उस उपदेश को जो तुम को पुत्रों की नाई दिया जाता है, भूल गए हो, कि हे मेरे
पुत्र, प्रभु की ताड़ना को हलकी बात न जान, और जब वह तुझे घुड़के तो हियाव न छोड़। (6) क्योंकि
प्रभु, जिस से प्रेम करता है, उस की ताड़ना भी करता है; और जिसे पुत्र बना लेता है, उस को कोड़े
भी लगाता है। (7) तुम दुख को ताड़ना समझकर सह लोः परमेश्वर तुम्हें पुत्र जानकर तुम्हारे साथ
बर्ताव करता है, वह कौन सा पुत्र है, जिस की ताड़ना पिता नहीं करता? (8) यदि वह ताड़ना जिस के
भागी सब होते हैं, तुम्हारी नहीं हुई, तो तुम पुत्र नहीं, पर व्यभिचार की सन्तान ठहरे! (9)फिर जब
कि हमारे शारीरिक पिता भी हमारी ताड़ना किया करते थे, तो क्या आत्माओं के पिता के और भी
आधीन न रहें जिस से जीवित रहें। (10) वे तो अपनी अपनी समझ के अनुसार थोड़े दिनों के लिये
ताड़ना करते थे, पर यह तो हमारे लाभ के लिये करता है, कि हम भी उस की पवित्रता के भागी
हो जाएं। (11) और वर्तमान में **हर प्रकार की ताड़ना** आनन्द की नहीं, पर शोक ही की बात दिखाई
पड़ती है, तौभी जो उस को सहते सहते पक्के हो गए हैं, पीछे उन्हें चैन के साथ धर्म का प्रतिफल
मिलता है।

हमें और अधिक फलदायक बनाने के लिए, परमेश्वर हमें छांटता है।

यूहन्ना 15:1–2 "सच्ची दाखलता मैं हूं; और मेरा पिता किसान है। (2) जो डाली मुझ
में है, और नहीं फलती, उसे वह काट डालता है, और जो फलती है, उसे वह छांटता है ताकि
और फले।"

भजन संहिता 34:19 " धर्मी पर बहुत – सी विपत्तियां आती तो है, परन्तु यहोवा उसको उन सब से छुड़ाता है।"

हमें इस सच्चाई को जानना चाहिए। परमेश्वर आपके जीवन में कार्यरत है – तब भी जब आप पहचान या समझ नहीं पाते। परन्तु यह तब ज़्यादा आसान और लाभदायक हो जाता है जब आप उसके साथ सहयोग करते हैं और दुख की पीड़ा को सह लेते हैं तथा जल्दी सीख लेते हैं।

फिलिप्पियों 1:6 और मुझे इस बात का भरोसा है, कि जिस ने तुम में अच्छा काम आरम्भ किया है, वही उसे यीशु मसीह के दिन तक पूरा करेगा।